REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2023

जीन जैक्स रूसो के दार्शनिक विचारों का अनुशीलन

डॉ. प्रवीण बाबू
(सहायक प्राध्यापक) श्री बजरंग शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,डीग,भरतपुर ,राजस्थान.

सारांश :-

भारतीय व्यवस्था और संस्कृति युगों–युगों की उत्पत्ति है। हमारे विचारक चिन्तक और आध्यात्मिक महापुरूषों ने समय–समय पर अपनी ज्ञान गंगा की धारा में न केवल भारतवर्ष वरन् सम्पूर्ण मानवता के लिए कामना की है। इस प्रकार हमारा अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। वर्तमान के यथार्थ को हमने स्वीकार तथा भविष्य के लिए अपने को जागरूक किया है लेकिन आज के आधुनिक युग में उन्मुक्तवादी विचारधाराओं ने हमारी सांस्कृतिक दृढ़ता को शिथिल करने का पूरा–पूरा प्रयास किया है। वर्तमान, भौतिकवादी युग में मनुष्य इतना अधिक बुद्धिवादी हो गया है कि वह किसी बात को सहज स्वीकार करने को तैयार नहीं है। लेकिन भौतिकवादी जगत कागज के फूल के समान है जिसमें टिकाऊपन तो है पर सहज सुगन्ध का अभाव होता है। दुर्भाग्य से हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली भी कागज के फूल जैसी ही सिद्ध हो रही है जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक स्तर पर अनैतिकता भ्रष्टाचार, हिंसा, अवसाद व घृणा आदि दुष्प्रवृत्तियाँ प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

आज के युग में चरित्र, नैतिकता, बन्धुत्व, समानता, मानवीय मूल्य से सारे शब्द इतिहास बनते जा रहें है, इनके अर्थ बदल गये है चारों तरफ एक ऐसे माहौल का निर्माण हो गया है जहाँ मानवता चित्कार कर रही है ऐसी परिस्थितियों में गहन चिन्तन एवं मनन के पश्चात् एक रास्ता दिखाई देता है और वह है शिक्षा । शिक्षा ही वह माध्यम है जो हम मानवों को विशेष दिशा प्रदान कर सकती है इसको ध्यान में रखकर शिक्षाशास्त्रियों पर नजर डाले तो रूसो का व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है।

किसी भी युग में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षा–नीति पर राष्ट्र की परम्परा, राष्ट्रीय प्रतिभा तथा राष्ट्र की परिस्थिति के सम्बन्ध में विचार होता आया है इसका कारण यह है कि राष्ट्र के सर्वोत्तम विकास का प्रभावशाली माध्यम शिक्षा हैं शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। और मनुष्य के द्वारा सभ्यता और संस्कृति का विकास किया जाता है अतः मानव समाज का भूत, वर्तमान और भविष्य जितना शिक्षा से जुड़ा है उतना किसी और से नहीं। यही कारण है कि संसार के सभी महापुरूष किसी न किसी रूप में शिक्षा से जुड़े रहे है।

प्रकृतिवादी शिक्षा का संयोजन करके रूसो ने शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक परिवर्तन करने का प्रयास किया। साथ ही तत्कालीन संकुचित एवं जर्जरित शिक्षा का विरोध किया। **जीन जैक्स रूसो के दार्शनिक विचारोंका** अध्ययन कर शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग ही इस शोध पपत्र का औचित्य है।

संकेत शब्द -दार्शनिक विचार , प्रकृतिवादी, रूसो

1.1 दर्शन का अर्थ –

दर्शन शब्द की उत्पत्ति दो यूनानी शब्दों से है। Philos और Sophia जिसका शाब्दिक अर्थ है Love of wisdom अर्थात् ज्ञान से प्रेम । भारतीय विचाराधारा Philosophy शब्द की अपेक्षा 'दर्शन' शब्द को व्यापक रूप में देखती है। 'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति 'दृश' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है –देखना

बरट्रेण्ड रसेल के शब्दों में –**''अन्य विधाओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति हैं। ''**

त्यागी, गुरसरनदास, 2010, 134

रूसों के दार्शनिक चिंतन को निम्न प्रकार समझा जा सकता है ।

1.1.1 रूसो के दार्शनिक चिंतन की तत्व मीमांसा –

दर्शन की इस शाखा में आत्म, ईश्वर, सत्ता, सृष्टि की रचना, सृष्टि की उत्पत्ति से सम्बन्धित प्रश्नों पर विचार किया जाता है, यथा आत्मा क्या है ? जीव क्या है ? आत्मा का शरीर से क्या सम्बन्ध है ?, ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं ? ईश्वर का स्वरूप कैसा है ? ब्रह्माण्ड के नश्वर तत्व क्या है ? क्या सृष्टि की रचना भौतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों से हुई है ? सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार हुई ? इत्यादि प्रश्नों के उत्तरों को खोजा जाता है।

त्यागी गुरसरनदास, 2010, 135

रूसो ने न तो इस ब्रह्माण्ड की रचना के बारे में कुछ लिखा है और न ही कहीं आत्मा परमात्मा की व्याख्या की है, पर थे ये ईश्वरवादी। ये आत्मा–परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते थे परन्तु स्वर्ग के ठेकेदार पादरियों का विरोध करते थे सचमुच उस समय यूरोप भर में पादरी धर्म के नाम पर भोली जनता का बेहद शोषण कर रहे थें रूसो की अपनी धारणा थी कि ईश्वर ने इस वस्तुजगत की रचना बहुत सोच समझकर की है और इसकी प्रत्येक वस्तु अपने में शुद्ध है, मनुष्य भी, अतः उसे अपनी प्रकृति के अनुसार ही जीने देना चाहिए।

लाल, रमन बिहारी एवं पलोड़ श्रीमती सुनीता, 2010, 135

1.1.2 रूसो के दार्शनिक चिन्तन की ज्ञान मीमांसा –

दर्शन की इस शाखा में सत्य ज्ञान से सम्बन्धित समस्याओं का हल खोजा जाता है यथा – सत्य ज्ञान क्या है ? इस ज्ञान को प्राप्त करने के कौन से साधन है ? क्या मानव बुद्धि इस ज्ञान को प्राप्त कर सकती है ? क्या ज्ञानेन्द्रियाँ द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान वास्तविक है ? किया आत्मा द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान? आदि का अध्ययन किया जाता है।

त्यागी, गुरसरनदास, 2010,136

रूसो के अनुसार प्रकृति का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। प्रकृति शब्द का प्रयोग रूसो ने कई रूपों में किया है – एक उसके लिए जो मनुष्य के प्रयत्न बिना निर्मित है और दूसरी वह जो मनुष्य ने अपने जन्म से पाई है और जिसके साथ मनुष्य ने कोई छेड़–छाड़ नहीं की है रूसो ने संसार के सभी दुःखों का कारण तत्कालीन सभ्यता और विज्ञान को बताया इसलिए ये इसके ज्ञान को आवश्यक नहीं मानते थे आगे चलकर इन्होंने आदर्श राज्य का पूरा खाका तैयार किया और मनुष्य की पूरी शिक्षा योजना तैयार की और शिक्षा द्वारा मनुष्य को वह सब सिखाने पर बल दिया जो मनुष्य के लिए समग्र रूप से हितकर है ज्ञान प्राप्ति के साधन एवं विधियों के विषय में रूसो का स्पष्ट मत है कि बच्चों को कर्मेन्द्रियों द्वारा करके और ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं के अनुभव से सीखने दो, ज्ञान बाहर से जबरन लादने की वस्तु नहीं, स्वंय करके स्वयं के अनुभव से प्राप्त करने की वस्तु है।

लाल, रमन बिहारी एवं पलोड़ श्रीमती सुनीता, 2010, 135

1.1.3 रूसो के दार्शनिक चिन्तन की मूल्य मीमांसा –

दर्शन की इस शाखा में व्यक्ति के शुद्व एवं अशुद्व आचरण से सम्बन्ध रखने वाली बातों का अध्ययन, तर्किक चिन्तन के विषय में विचार, सौन्दर्य विषयक, आदि से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर खोजे जाते है, यथा –

मनुष्य को क्या करना चाहिए ?, क्या नहीं करना चाहिए ?, तार्किक चिन्तन का स्वरूप क्या है ? तर्क की विधि क्या है ?, सौन्दर्य क्या है ? और सौन्दर्य का मापदण्ड क्या है ? इत्यादि।

त्यागी, गुरसरनदास, 2010,136

रूसो मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठतम् कृति मानते थे और यह जानते थे कि ईश्वर ने उसे जन्म से अच्छा बनाया है यही कारण है कि उन्होंने मनुष्य को किसी भी प्रकार से सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक नियमों से मुक्त कर, उसे अपनी प्रकृति के अनुसार आचरण करने की सलाह दी है, और यह मानकर दी है कि उसकी स्वयं की प्रकृति सरल है, शुद्ध है, एक दूसरे से प्रेम करने की है, एक–दूसरे से सहयोग करने की है और सुखपूर्वक जीने की है। इनका अपना अनुभव यह था कि सभ्यता के नाम पर मनुष्य झूठ, फरेब, मक्कारी और शोषण करना सीखता है।

सभ्यता को रूसो विज्ञान की उपज मानते थे इसलिए इन्होंने विज्ञान और विकास का भी विशेष विरोध किया। इन्होंने अनुभव किया कि बुद्धिमान लोग सरल एवं स्वच्छ प्रकृति वाले लोगों का शोषण करते है, रूसो मनुष्य से प्रेम एवं सहयोग के साथ रहने की अपेक्षा करते थे और उससे एक–दूसरे से झूठ न बोलने, फरेब न करने और एक–दूसरे का शोषण न करने की उपेक्षा करते थे। इसे रूसो ने एक शब्द सत्संकल्प से अभिव्यक्त किया है।

लाल, रमन बिहारी एवं पलोड़ श्रीमती सुनीता, 2010, 136

1.2 जीन जैक्स रूसो का प्रकृतिवादी दृश्टिकोण –

1.2.1 रूसो के प्रकृतिवाद को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है –

प्राकृतिक राज्य, प्राकृतिक समाज तथा प्राकृतिक पुरूष की कल्पना – प्राकृतिक राज्य से रूसो का तात्पर्य ऐसे राज्य से है जिसमें किसान वर्ग रहता हो, वहाँ बुराईयों से युक्त आधुनिक सभ्यता न हो और न अत्याचारी, व्यसनी तथा शोषण करने वाले शासक ही हो। वह ऐसा राज्य चाहता था। जो कि स्वतन्त्रता , बन्धुत्व तथा समानता पर आधारित हो। प्राकृतिक समाज से रूसो का तात्पर्य कृत्रिम सभ्यता से मुक्त समाज से था जिसमें धोखेबाजी, मक्कारी तथा बनावट न हो, उसने स्वाभाविकता की ओर लौटने की मॉग की ताकि जनता में सद्गुणों का विकास हो एवं जनमत की इच्छाओं का सम्मान हों। इस प्रकार रूसो सामाजिक एकता पर बल देता है। रूसो के अनुसार प्राकृतिक पुरूष वह है जो समाज में व्याप्त बुराईयों से दूर रहकर अपने अन्तर्निहित सद्गुणों का पूर्ण विकास कर सकें। रूसों कहते है व्यक्ति एवं समाज का पारस्पारिक सम्बन्ध है। परतन्त्र में व्यक्ति समाज के लिए अवश्यक है परन्तु उसे सीमित मात्रा में स्वतन्त्रता चाहिए। उसको वैयक्तिक्ता पर गुलामी की जंजीरे डालने का किसी भी आदर्श समाज को अधिकार नहीं है। वह कहता है इस झूठी सभ्यता के कृत्रिम आवरण को उतारकर फेंक देने पर ही व्यक्ति का पूर्ण विकास सम्भव है अतः अपने प्रकृतिगत स्वतन्त्रता के आधार पर जनता का शासन, जनता की स्वतंत्रता एवं जनता के कल्याण की माँग की। इन्हीं विचारों को उसने शिक्षा के क्षेत्र में भी लागू किया।

रूसो ने प्रकृति शब्द के तीन अर्थ किये है –

(क) सामाजिक प्रकृति
(ख) मनोवैज्ञानिक प्रकृति (वैयक्तिक)
(ग) वैज्ञानिक प्रकृति (आदृश्य शक्ति – सम्बन्धी)

क.सामाजिक प्रकृति – सामाजिक प्रकृति का आशय है समाज का जो स्वाभाविक रूप है, जहाँ पर कोई नियम और बन्धन नहीं है उस प्राकृतिक अवस्था में रखकर बालक की शिक्षा, व्यवस्था करना। उसमें कोई कृत्रिम मोड लाने की आवश्यकता नहीं है। वह बालक के अनुभवों को अच्छा समझता है। दूसरों के सम्पर्क से उसमें दोष उत्पन्न हो जाने का भय है। इस प्रकार रूसो असामाजिक शिक्षा के द्वारा बालक को शिक्षा देना चाहता है।

ख. मनोवैज्ञानिक प्रकृति– मनोवैज्ञानिक प्रकृति से तात्पर्य बालक की आन्तरिक प्रवृत्तियों, रूचियों एवं योग्यताओं के अनुकुल शिक्षा देने से है। बालक की स्वाभाविक क्रियाओं में हस्तक्षेप करना रूसो को पसन्द नहीं।

इसके अनुसार तो बालक की प्रकृतिदत्त शाक्तियों का विकास ही शिक्षा है और यह विकास एक आन्तरिक क्रिया है जो ब्राह्य शक्ति द्धारा संम्भव नहीं है। वरन् उनको क्रियाशील बनाने से होता है।

(ग) वैज्ञानिक प्रकृति – इसे भौतिक प्रकृति भी कह सकते है। यहाँ रूसो का तात्पर्य प्राकृतिक वातावरण से है। वह शहरों की अपेक्षा गाँवों से शिक्षा का केन्द्र बनाना चाहता है। वह कहता है कि बालक प्रकृति की विभिन्न परिस्थितियों एवं प्राकृतिक वस्तुओं – जैसे सूर्यास्त, सूर्यादय, झरनों, वनों, पशु–पक्षियों आदि के बीच रहकर स्वयं ज्ञान प्राप्त करें।

1.2.2 शिक्षा प्राप्ति के तीन स्रोत –

अपनी प्रसिद्व पुस्तक 'एमिल' में रूसो ने एमील की शिक्षा के लिए तीन साधन बताए है – प्रकृति, पुरूष तथा पदार्थ । प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करने का तात्पर्य बालक की अभिरूचि और शक्तियों के अनुसार शिक्षा देने से है। पुरूष से शिक्षा प्राप्त करने का अर्थ शिक्षा प्रक्रिया में समाजिकता की भावना के प्राधान्य से है तथा पदार्थ से शिक्षा का अभिप्राय रूसों ने वातावरण द्वारा प्राप्त बालक के स्वयं अनुभवों से लगाया है मनुष्य और नागरिक ये दो पृथक व्यक्तित्व उसने माने है और उसके मत से इन दोनें में से किसी एक की ही शिक्षा भली प्रकार से दी जा सकती है क्योंकि यदि नागरिकता की शिक्षा दी गई तो मनुष्य में समुचित गणों का विकास न हो सकेगा किन्तु रूसो नागरिक की अपेक्षा मनुष्य का निर्माण करना चाहता हैं इसीलिए उसने उपयुक्त तीनों स्रोतों से प्राप्त की गई शिक्षा को बालक के सर्वागीण विकास के लिए उपर्युक्त समझा।

1.2.3. मनुष्य के पतन का मूल कारण सभ्यता–

रूसो ने उस समय की प्रचलित सभ्यता की बहुत आलोचना की। उसने कहा कि आधुनिक समाज की कृत्रिम सभ्यता ने समाज एवं व्यक्ति को बिगाड़ दिया है। प्रकृति से दूर होकर कृत्रिम सभ्यता के फेर में व्यक्ति का पतन हो रहा है। इस प्रकार समाज में दासता की बेड़ियों से जकड़ा हुआ व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता को पूर्णतया खो बैठा है । इसीलिए अपने 'प्रकृति की ओर लौटो' का नारा लगाया तथा नगरों को छोड़ने की सलाह दी।'एमील' की प्रारम्भिक पंक्तियों में वह लिखता है 'प्रकृति के निर्माता के यहाँ से जो कुछ भी आता है वह सुन्दर होता है किन्तु मनुष्य के हाथ में आते ही वह विकृत हो जाता है। इसीलिए वह कहता है कि जो समाज में किया जाता है यदि तुम ठीक उसके विपरीत करो तो तुम सही मार्ग पर पहुँच जाओगे। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सोशल कान्ट्रेक्ट' में वह लिखता है कि मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र है परन्तु पैदा ही उसे कपड़ों में लपेटा जाता है और मरने पर कफन से ढॉक दिया जाता है। आजीवन वह सामाजिक आडम्बरों एवं सस्थाओं की जंजीरों में जकड़ा रहता है। एक अपने को दूसरों का स्वामी कहता है। फिर भी वह दूसरों की उपेक्षा अधिक बड़ा दास होता है। वह कहता है कि मनुष्य को प्रकृति की भांति स्वतन्त्र रूप से प्राकृतिक नियमों के अनुसार अपनी योग्यता के आधार पर कार्य करना चाहिए।

1.2.4 प्रकृति एक महान् शिक्षक के रूप में –

रूसो ने प्रकृति को उच्च स्थान ही नहीं दिया वरन् उस पर निर्भर रहने के लिए जोर भी दिया। यही कारण था कि उसने 'प्रकृति का अनुसरण करने' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। वह कहता है कि प्रकृति में समाज की भॉति हलचल और उत्तेजना नहीं है वरन् इसमें अच्छाई है, स्वतन्त्रता है, प्रवाह एवं लय है, शासनहीनता तथा मधुरता है इस प्रकार प्रकृति में समरसता है, यह ज्ञान स्रोत है। प्रकृति ही सबसे बड़ा शिक्षक है जो बालक का पालन–पोषण एवं शिक्षा कार्य सुन्दर रूप में कर सकती है।

ग्रोवर, डॉ0 इन्द्रा, 2001,42–4

निष्कर्ष -

➢ रूसो के दार्शनिक चिन्तन की तत्व मीमांसा –

रूसो ने न तो इस ब्रह्मम्ण की रचना के बारे में कुछ लिखा है और न ही कहीं आत्म परमात्मा की व्याख्या की है, पर थे ये ईश्वरवादी । ये आत्म–परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते थे परन्तु स्वर्ग के ठेकेदार पादरियों का विरोध करते थे।

➢ रूसो के दार्शनिक चिन्तन की ज्ञान मीमांसा –

रूसो ने प्रकृति के द्वारा प्राप्त ज्ञान को ही सच्चा ज्ञान माना है रूसो ने संसार के सभी दुखों का कारण तत्कालीन सभ्यता और विज्ञान को बताया इसलिए ये इनके द्वारा प्राप्त ज्ञान को आवश्यक नहीं मानते, इन्होंने आगे चलकर आदर्श राज्य को पूरा खाका तैयार किया और मनुष्य की पूरी शिक्षा योजना तैयार की और शिक्षा के द्वारा मनुष्य को वह सब सिखाने पर बल दिया जो मनुष्य के लिए समग्र रूप से हितकर है।

➢ रूसो के दार्शनिक चिन्तन की मूल्य मीमांसा –

रूसो मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति मानते थे, इन्होंने मुनष्य को किसी भी प्रकार के सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक नियमों से मुक्त कर, उसे अपनी प्रकृति के अनुसार आचरण करने की सलाह दी है।

इनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य का अपना व्यक्तित्व होता है उसकी अपनी रूचियाँ होती है सभी मनुष्य जन्म से स्वतंत्र पैदा होते है और स्वतंत्र रहना चाहते है परन्तु समाज उन्हें स्वतन्त्र नहीं रहने देता और अपने नियमों के बन्धन में बॉधता है। रूसो मनुष्य को सामाजिक बन्धनों से मुक्त कर उसका स्वतन्त्र विकास चाहता है।

रूसो का प्रकृतिवादी दृष्टिकोण:

रूसो के अनुसार प्राकृतिक पुरूष वह है जो समाज में व्याप्त बुराईयों से दूर रहकर अपने अन्तनिर्हित सद्गुणों का पूर्ण विकास कर सकें। रूसों कहते है व्यक्ति एवं समाज का पारस्पारिक सम्बन्ध है। परतन्त्र में व्यक्ति समाज के लिए अवश्यक है परन्तु उसे सीमित मात्रा में स्वतन्त्रता चाहिए। उसको वैयक्तिक्ता पर गुलामी की जंजीरे डालने का किसी भी आदर्श समाज को अधिकार नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ – सूची

1. अग्रवाल, जे0सी0 एवं गुप्ता, एस0 (2008), ''ग्रेट फिलॉसोफर्स एण्ड थिंकर्स आन एजूकेशन'' शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0सं0 (97–107)।
2. अग्रवाल, डॉ0 ज्योति एवं यादव, डॉ0के0के0, (2013), ''वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा'' साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ0स0 (80–84)।
3. ग्रोवर, डॉ0 इन्द्रा, (2001), ''संसार के महान् शिक्षाशास्त्री'' विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ0सं0 (37–61)।
4. चौबे, सरयू प्रसाद एवं चौबे, अखिलेश, (2003), ''शिक्षा के आधार,'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृ0स0, (34–47)।
5. चड्डा, डॉ0 सतीश सी, (2010) ''टीचर इन इमरजिंग इडियन सोसायटी'' इनटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ0सं0 (109,120)।
6. तनेजा, विद्यारतन, (2007), ''फिलोसफी एण्ड सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन'' सुरजीत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0स0 (103–121)।
7. त्यागी, गुरसरनदास, (2010), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0स0 (160–175)।
8. नारायण, डॉ0 इकबाल, (1992), ''भारतीय राजनीतिक विचारक'', शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृ0सं0 (244–286)।
9. पचौरी, डॉ0 गिरीश, (2009), ''एजुकेशनल इन इमरजिंग इण्डिया'' आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0 (330–341)।
10. पाल, डॉ0 एस0के0, गुप्त, प्रो0 लक्ष्मी नारायण श्रीवास्तव, प्रो0 मदन मोहन (1996)''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार' न्यू कैलाश प्रकाशन, आगरा, पृ0सं0 (71–100)।
11. पाल, डॉ0 एम0, (2012), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त,'' साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ0सं0 (85–95)।

12. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, (2005), ''शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि'' आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0 (114–123)।
13. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, (2007), ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0स0 (147–155)
14. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, (2007), ''विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा–शास्त्री'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0स0 (54–65)।
15. पाठक, पी0डी0 एवं त्यागी, जी.एस.डी, (2007),''शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0स0 (129–145)।
16. माथुर, डॉ0 सावित्री, (2008), ''शिक्षा दर्शन'' आस्था प्रकाशन, जयपुर (64–74)।
17. मुखर्जी, सुब्रता एवं रामस्वामी सुशीला, (1998), ''जीन जैक्स रूसो'' दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली पृ0स0 (1–23)।
18. मित्तल, प्रो0 एम0एल0, (2003), '' उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा'' लायल बुक डिपो, आगरा मेरठ, पृष्ठ स0 (179–195)।
19. रस्क, आर राबर्ट, (2001), ''महान शिक्षाशस्त्रियों के सिद्धान्त'' विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी, पृ0सं0 (145–197)।
20. रूहेला, प्रो0 सत्यपाल (2007) ''विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0स0 (51–61)।
21. लाल, प्रो0 रमन बिहारी एवं मल्होत्रा, डॉ0 नीरू, (2009), ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा'' आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0स0 (134–152)।
22. लाल, प्रो0 रमन बिहारी एवं पलोड़, श्रीमती सुनीता, 2010, ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'' आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0स0 (134–151)।
23. शर्मा, एन0आर0, (2007), ''फिलोसफी एण्ड सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन'' सुरजीत पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ.सं., (88–94)।
24. शर्मा, श्रीमती आर0के0, दुबे श्री कृष्ण एवं बरौलिया, डॉ0 ए0, (नवीनतम् संस्करण) ''शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत में शिक्षा'' राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा0लि0, आगरा, पृ0स0 (30–32)।